

---

.. Vinayaka Vinati ..

॥ श्रीविनायकविनतिः ॥

Document Information

---

Text title : vinAyaka vinatiH  
File name : vinaayakavinati.itx  
Location : doc\_ganesha  
Author : shivaprasAdadvivedi  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : WebD  
Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com  
Latest update : September 02, 2004  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 3, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ श्रीविनायकविनतिः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

हेरम्बमम्बामवलम्बमानं लम्बोदरं लम्ब-वितुण्ड-शुण्डम् ।  
उत्सङ्गमारोपयितुं ह्यपर्णां हसन्तमन्तर्हरिरूपमीडे ॥ १ ॥

मिलिन्द-वृन्द-गुञ्जनोल्लसत्कपोल-मण्डलं  
श्रुति-प्रचालन-स्फुरत्समीरवीजिताननम् ।  
वितुण्ड-शुण्डमण्डल-प्रसार-शोभिविग्रहं  
निवारिताघ-विघ्नराशिमङ्कलालपं भजे ॥ २ ॥

गजेन्द्र-मौक्तिकालि-लग्न-कम्बुकण्ठ-पीठकं  
सुवर्णवल्लि-मण्डली-विधानबद्ध-दन्तकम् ।  
प्रमोदि-मोदकाञ्चितं करण्डकं कराम्बुजे  
दधानमम्बिकामनो विनोद-मोददायकम् ॥ ३ ॥

गभीर-नाभि-तुन्दिलं सुपीत-पाट-धौतकं  
प्रतप्त-हाटकोपवीत-शोभिताङ्ग-सङ्ग्रहम् ।  
सुरा-ऽसुरार्चितांप्रिकं शुभक्रिया सहायकं  
महेशचित्त-चायकं विनायकं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

गजाननं गणेश्वरं गिरीशजा-कुमारकं  
महेश्वरात्मजं मुनीन्द्र-मानसाधि-धावकम् ।  
मतिप्रकर्ष-मण्डितं सुभक्त-चित्त-मोदकं  
भजज्जनालिघोर-विघ्नघातकं भजाम्यहम् ॥ ५ ॥

लसल्ललाट-चन्द्रकं क्रियाकृतेऽस्ततन्द्रकं  
महेन्द्रवन्द्य-पादुकं षडाननाग्रजानुजम् ।  
अहिं निवार्य मूषकाधिरक्षकं मयूरकं  
विलोक्य सुप्रसन्नमानसं गणाधिपं भजे ॥

हरिं निरीक्ष्य भीतिचञ्चलाक्षमेत्य मातरं  
निजावनाय पार्श्वमागतां विलोक्य सत्वरम् ।  
तदीय-वक्षसि प्रविश्य सुस्थिरं परे वरे  
नमामि सेवकालिशोक-शोषकं निरन्तरम् ॥ ७ ॥

निलिम्प-लोकमण्डलो-प्रपूर्ण-पूजनीयकं  
सुभक्त भक्तिभावना विभाविताखिलप्रदम् ।  
प्रभूत भूति भावकं दुरूह दुःख पावकं  
ब्रजेश्वरांश-सम्भवं विद्युप्रभासितालिकम् ॥ ८ ॥

गिरीन्द्र-नन्दिनी-कराम्बुज-प्रसाधिताऽलकम्  
विलोल-शुण्ड-चुम्बितोग्र-भालचन्द्र-बालकम् ।  
निजाखु-खेलनापरं कखन्तमस्तचापलं  
नमामि सिद्धि-बुद्धि-हस्त-चालि-पञ्चचामरम् ॥ ९ ॥

विनायकस्य विनतिं पठतां शृण्वतां सताम् ।  
सिद्धि-बुद्धि-प्रदां सन्ति मङ्गलानि पदे पदे ॥ १० ॥

॥ इति पण्डित-श्रीशिवप्रसादद्विवेदि-विरचिता विनायक-विनतिः समाप्तः ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

.. Vinayaka Vinati ..

was typeset on August 3, 2016

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

